International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 18-22

सीधी जिले में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ० मृगेन्द्र सिंह परिहार
प्राचार्य, शिक्षा महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सीधी जिले में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। जनजातियों के सामाजिक, शैक्षणिक तथा बालिकाओं के शिक्षा के प्रति संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा जागृति के बारे में लिखा गया है। जिले में अनेक जातियों तथा धर्मो के लोग निवास कर रहे है, किन्तु ये जनजाति प्राचीन काल से लेकर अब तक सामाजिक तथा शैक्षिक रूप से अपने को विकसित नहीं कर पाये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उनकी इसी दशा का विशेष रूप से वर्णन किया गया है, ताकि संचार साधनों के प्रचार–प्रसार से जनजाति क्षेत्रों में बालिकाओं के शिक्षा के प्रति जागरुक किया जा सके। समाचार पत्र, इंटरनेट, टी.व्ही., कम्प्यूटर आदि का शैक्षिक कार्यों में किस प्रकार प्रयोग में लाया जाए। मात्र पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन और पाठों का कंठस्थ कराना ही बच्चों के सीखने की प्रवृत्ति नही होनी चाहिए। दृश्य–श्रव्य शिक्षा प्राप्त करने को वास्तविक एवं प्रभावी बनाने में सहायता करते हैं।

मूल शब्द : सीधी जिला, संचार, प्रचार–प्रसार, जनजातीय, शैक्षिक विकास।

प्रस्तावना
आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। आधुनिक समय में तकनीकी का प्रयोग बड़ी तेजी से हो रहा है। इसका प्रयोग सभी क्षेत्रों जैसेः–व्यापार, उद्योग, रक्षा, चिकित्सा, प्रशासन तथा मनोरंजन इत्यादि में बहुतायत से किया जा रहा है। तकनीकी के प्रयोग से कार्य प्रभावी ढंग से होते हैं। आज सूचना क्रान्ति के युग में हैं, जहाँ संचार माध्यम लोगों के बीच जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अतः अधिगम प्रक्रिया को बेहतर व प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से तकनीकी को शिक्षा में समाहित किया गया है। तकनीकी का प्रभाव आज शिक्षा के सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है। शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग सर्वप्रथम 1926 में अमेरिका में सिडनी प्रेस्सी ने शिक्षण मशीन के द्वारा किया था। 'शैक्षिक तकनीकी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1950 में यूनाइटेड किंगडम में ब्रायनमोर जोन्स रिपोर्ट में किया गया था।

शैक्षिक तकनीकी वैज्ञानिक आविष्कारों एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग है, जिसके फलस्वरूप शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। इसके द्वारा शिक्षा को अधिक रोचक, सरल एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शैक्षिक तकनीकी शिक्षा की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने का प्रयास करती है। यह न केवल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाती है अपितु यह शिक्षा के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः शैक्षिक तकनीकी ऐसा विज्ञान है, जिसके द्वारा शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिए नई–नई व्यूह रचनाओं का विकास किया जा सकता है।

वर्तमान समय में शैक्षिक तकनीकी की उपयोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शिक्षा के हर क्षेत्र में इसका लाभ लिया जा रहा है। शैक्षिक तकनीकी ने शिक्षक के कार्य को अत्यंत आसान बना दिया है। इसकी सहायता से शिक्षक कक्षा में पाठ्य–वस्तु के प्रस्तुतीकरण को अधिक रोचक, ग्राह्य, सरल व प्रभावशाली बना सकता है।

संचार शब्द अंग्रेजी के कम्युनिकेशन का हिन्दी रूपांतर है जो लैटिन शब्द कम्युनिस से बना है, जिसका अर्थ है सामान्य भागीदारी युक्त सूचना। चूंकि संचार समाज में ही घटित होता है। अतः हम समाज के परिप्रेक्ष्य से देखें तो पाते हैं कि सामाजिक संबन्धों को दिशा देने अथवा निरंतर प्रवाहमान बनाए रखने की प्रक्रिया ही संचार है। संचार समाज के आरंभ से लेकर अब तक के विकास से जुड़ा हुआ है।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बच्चों का प्रशिक्षण एक कला है जिसके लिए रचनात्मकता, समय, धन और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। बच्चों के प्रशिक्षण में प्रयोग की जाने वाली ऊर्जा का अधिकांश भाग, उनके लिए कार्यक्रम बनाने और बच्चों के खाली समय को सही ढंग से भरने में खर्च होता है। अलबत्ता कार्य का परिणाम सदैव संतोषजनक नहीं होता क्योंकि बहुत से माता–पिता या अभिभावक, बच्चों के खाली समय को भरने के लिए उचित कार्यक्रम बनाने में सफल नहीं हो पाते। बहुत से बच्चे यहां तक कि उनके माता–पिता मनोरंजन के लिए अन्य संचार माध्यमों की तुलना में टेलिविजन देखने और कम्प्यूटर गेम्स के चयन को अधिक महत्व देते हैं जबकि अनियमित ढंग से टेलिविजन देखने या हिंसक खेल खेलने के दुष्परिणाम बहुत अधिक होते है। बचपन के एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में और विभिन्न अध्ययनों में प्रभावी होने के कारण वर्तमान समय में विश्व में बहुत से लोग और संगठन समाज के इस वर्ग की समस्याओं के समाधान के लिए प्रयासरत है और वे इसके प्रति लोगों को जागरुक भी बना रहे है।

संचार माध्यम और उनके कार्यक्रम बच्चे के मन में इस कल्पना को उत्पन्न कर सकते हैं कि ईश्वर उनकों पसंद करता है और उसने उनके लिए इतना सुन्दर संसार बनाया है। अतः बच्चों को धार्मिक प्रशिक्षण में ईश्वर की कृपा पर बल, एक महत्वपूर्ण विषय है। भविष्य के प्रति सकारात्मक विचार रखना, सुव्यवस्था के आधार पर संसार की सृष्टि, जैसी बातें भी बच्चों के प्रशिक्षण के कुछ ऐसे नियम है जिन पर संचार माध्यमों को बच्चों के लिए बनाए जाने वाले

कार्यक्रमों में ध्यान देना चाहिए। सूचनाओं के संसार में यदि हम बच्चों को होशियारी के साथ प्रविष्ठ करेंगे तो फिर बच्चों पर संचार माध्यमों के प्रभाव के प्रति हमें अधिक चिंता नहीं होगी। वास्तविकता यह है कि आधुनिक संसार में जीवन व्यतीत करने के लिए बच्चे को तत्पर करने का एक मात्र मार्ग यह है कि हम इस संसार को उचित ढंग से पहचानें।

समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए आदिवासी क्षेत्र के लोगों में शैक्षिक विकास होना आवश्यक है। आज इस बात की आवश्यकता है कि जब हमारा समाज तकनीकी, ज्ञान–विज्ञान के माध्यम से नवीन शताब्दी में प्रवेश कर चुका है तो इस सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक उत्थान की प्रक्रिया में उसका प्रत्येक व्यक्ति सदैव अपना योगदान दे और अपनी वैयक्तिकता, गुण, सामर्थ्य और कौशल को इस प्रकार संजोयें एवं सजाए कि वैज्ञानिक व तकनीकी समाज में अर्थपूर्ण पहचान ही न बनाएं बल्कि सार्थक क्रियाशील व रचनात्मक योगदान भी दें।

हाई स्कूल में अध्ययनरत् किशोरवय बालिकाओं का व्यक्तित्व निर्माण प्रक्रिया के संवेदनशील दौर में होती है। उनका शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास उन्हें रोमांच एवं नवीनता का आभास दिलाता है। मानसिक एवं शारीरिक क्षमता में उत्तरोत्तर वृद्धि भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए आत्मबल प्रदान करती है। ऐसी अवस्था में अध्यापकों, अभिभावकों एवं नीति निर्धारकों का अपेक्षाकृत अधिक जिम्मेदारी का परिचय देना होता है, जिसका वर्तमान परिस्थितियों में सर्वथा अभाव है और जिले के सामने किशोरवय बालिकाओं के शैक्षिक अभिरूचि को सजाने, संवारने एवं परिपक्व बनाने के पश्चात् सकारात्मक परिणाम को प्राप्त करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

शोध समस्या एवं स्पष्टीकरण

मानव समाज के विभिन्न वर्गो में शिक्षा की स्थिति एवं स्तर में विभिन्नता देखी जा सकती है। इस ओर शासकीय एवं अशासकीय स्तर पर संचार साधनों के प्रचार–प्रसार से निदान के प्रयास भी किये जा रहे है, लेकिन समाज के दलित, शोषित, पिछड़े, उत्पीड़न व विपन्न वर्ग अभी भी शैक्षिक विकास से कोसों दूर है। वर्तमान समय में भी जनजातीय क्षेत्र के बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में सहभागिता संतोषप्रद नहीं है, जबकि उच्च एवं अन्य सम्पन्न वर्ग अपेक्षाकृत अधिक लाभान्वित हुआ है। इसलिए इसका अध्ययन शीर्षक के अन्तर्गत शोध के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरण

1. **सीधी जिला–** सीधी मध्यप्रदेश के उत्तर–पूर्व छोर पर स्थित जिला है। इसका मध्यप्रदेश में एक ऐतिहासिक स्थान है। सीधी जिले का प्राकृतिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व है। सोन इस जिले की महत्वपूर्ण नदी है। यह नदी प्राकृतिक संपदा से भरपूर है।
2. **संचार साधनों के प्रचार–प्रसार** – समाचार पत्र, इंटरनेट, टी.व्ही. , कम्प्यूटर।
3. **हाई स्कूल** – मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित कक्षा 9 से 10 तक।
4. **जनजातीय क्षेत्र** – सीधी जिले में जनजातीय क्षेत्र में संचालित हाई स्कूल।
5. **बालिकाओं** – बालिकाओं से तात्पर्य आदिवासी क्षेत्र की बालिकाओं से है जो कक्षा 9 से 10 तक अध्ययनरत हैं।
6. **शैक्षिक विकास** – शैक्षिक विकास से तात्पर्य है हाई स्कूल स्तर पर बालिकाओं से उनके शैक्षिक विकास के विभिन्न पक्षों के प्रति जानकारी प्राप्त करना।
7. **समीक्षात्मक अध्ययन** – शोध के अन्तर्गत न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत जनजातीय क्षेत्रों के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शैक्षिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन का उद्देष्य

1. शिक्षा एवं संचार के नवीन माध्यमों जैसे– दृष्य उपकरणों, अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं इत्यादि के प्रबंध की महती आवश्यकता पर बल देना।
2. किशोरियों की उम्र, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का शैक्षिक रूचि से सामंजस्य ज्ञात करना।
3. 21वीं सदीं के विकसित भारत के निर्माण में किशोरियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना तथा भविष्य के प्रति जागरूक बनाना।
4. जिले के जनजाति वर्गों की शैक्षिक विकास का पता लगाना।
5. जिले में जनजाति वर्गों की शिक्षा के विकास में आने वाले अवरोधों व समस्याओं का पता लगाना।

शोध अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

शोध अध्ययन के माध्यम से शोधार्थी जनजाति के वर्ग के लोगों में सामाजिक परिवर्तन, व्यावसायिक मार्गदर्शन एवं बालिकाओं का समुचित शैक्षिक विकास एवं परिवर्धन करना चाहता है। शोध कार्य के अन्तर्गत जिन महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है वह निम्नांकित हैं–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में निवास कर रहे जनजाति के बालिकाओं की हाई स्कूल स्तर पर शिक्षा के विकास में शासन द्वारा चलायी जा रही प्रोत्साहन योजनाओं का क्या प्रभाव पड़ रहा है तथा संचालित योजनाओं की यथार्थ स्थिति क्या है।
2. जनजाति की सामाजिक व धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं, रूढ़ियों का पता लगाकर हाई स्कूल स्तर पर शिक्षा के प्रति बालिकाओं को प्रोत्साहित करना।
3. जनजाति के बालिकाओं के कक्षा शिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु संचार के प्रचार–प्रसार और अधिक आवश्यकता है।

शोध परिकल्पना

मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक अनुसंधान का प्रारंभ जब होता है, जबकि एक समस्या हो। समस्या की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन परिकल्पना है। शैक्षिक अनुसंधान में समस्या चयन के बाद परिकल्पनाओं की रचना शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना से समस्या समाधान को उचित दिशा निर्धारित होती हैं परिकल्पनाओं द्वारा अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में ठीक दिशा मिलती है। भौतिक विज्ञानों में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैं:–

1. "संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में जनजाति के बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है।"

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र जिला सीधी है। इसके अन्तर्गत 3 विकासखण्ड – कुशमी, मझौली, रामपुर नैकिन, सीधी व सिहावल हैं।

न्यादर्ष चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्ष की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है जो निम्नानुसार है–

सारणी 1: न्यादर्श चयन

क्र.	विकासखण्ड	विद्यालय संख्या	शिक्षक संख्या	प्राचार्य	अभिभावक संख्या	छात्र संख्या
1.	कुशमी	10	20	10	20	200
2.	मझौली	10	20	10	20	200
3.	रामपुर नैकिन	10	20	10	20	200
4.	सीधी	10	20	10	20	200
5.	सिहावल	10	20	10	20	200
योग		50	100	50	100	1000

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है जिले के सभी विकासखण्डों से 10–10 विद्यालय कुल 50 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 100 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 बालक व 10 बालिका, कुल 1000 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

i) सर्वेक्षण अध्ययन विधि : सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

ii) साक्षात्कार विधि : शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

iii) साख्यिकीय विधि : सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिषत (%), S.D., Chisquare test, 'T' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)[1], बेहार, शरद (1983)[2], पाठक, पी.डी. (2007)[3], गुप्ता, एस.पी. (1997)[4], कौल, लोकेश (1998)[5], कुमार प्रमिला (2003)[6], Anjaiah, G. (2008)[7], Naidu, T.S. (2000)[8] and Pradhan, Nityananda (2004)[9] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

शोध उपकरण

शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. प्राचार्य साक्षात्कार अनुसूची।
2. शिक्षक प्रश्नावली पत्रक।
3. अभिभावक साक्षात्कार अनुसूची।
4. छात्र प्रश्नावली पत्रक।

शोध क्षेत्र का परिचय

भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के पूर्वोत्तर में विन्ध्य उपाधिकाओं के बीच सीधी जिला स्थित है। प्रारंभ में यह सिद्धी सम्प्रदाय के शासकों द्वारा शासित रहा। सीधी प्राचीनकाल में शैव साधकों की शरणास्थली रहा। इस बात की पुष्टि चुरहट स्थित सन्यासियों की कोठी, यहाँ के पुरातत्व, वास्तुशिल्प एवं प्राचीन मंदिर इस मूर्तियों के द्वारा होती है।

कालान्तर में यह क्षेत्र चौहानों के अधीनस्थ रहा, जो कुछ काल तक स्वतन्त्र एवं बाद में रीवा राज्य के बघेल शासकों के अधीन रहकर शासन करते रहे। 1 अप्रैल 1949 तक यह जिला बघेलखण्ड रियासत के अन्तर्गत था एवं रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात विंध्यप्रदेश के अन्तर्गत हो गया। 1 नवम्बर 1956 में राज्य के पुर्नगठन के फलस्वरूप मध्यप्रदेश राज्य का निर्माण हुआ, तो यह जिला मध्यप्रदेश के रीवा संभाग का एक जिला हो गया। यहाँ सोनभद्र नदी एवं बनास नदी के संगम स्थल पर भमरसेन के निकट चन्दरेह में प्राचीन शिव मंदिर है, जो 5 वीं सदी का है। इसकी वास्तुकला अद्वितीय है। इसके साथ ही एक प्राचीन शिव मंदिर है, जो 5 वीं सदी का है। इसकी वास्तुकला अद्वितीय है। इसके साथ ही एक प्राचीन शिवमठ है जो उस समय का धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शिक्षा का केन्द्र था। इसके अतिरिक्त यहाँ लुरघुटी का किला, बढ़ौरा का शिव मन्दिर एवं कलचुरि का विश्राम गृह दर्शनीय है।

ऐतिहासिक, धार्मिक/पुरातात्विक स्थल

1. **चन्दरेह का मंदिर :** जिला मुख्यालय से 42 किमी0 दूर है। कलचुरि सम्वत् 724 समीचीन काल 973 ई0 आसपास निर्मित है।

2. **घोघरा :** सीधी मुख्यालय से 15 कि0मी0 दूर चण्डी मंदिर है।
3. **परसिली रेस्ट हाऊस :** जिला मुख्यालय से 50 कि0मी0 दूर मनोरम पर्यटन स्थल है।
4. **नौढ़िया शिकारगाह :** परसिली से 8 कि0मी0 दूर बघेल राजाओं के द्वारा निर्मित कठगंगला (लकड़ी द्वारा निर्मित)
5. **बढ़ौरा का मंदिर :** सीधी मुख्यालय से 15 कि0मी0 दूर शिव मंदिर है।

सीधी जिले का भौगोलिक परिदृश्य

सीधी जिला मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग $23^0 47'$ से $24^0 42'$ तक उत्तरी अक्षांश और $81^0 18'$ से $82^0 40'$ तक पूर्वी देशान्तर में स्थित है। जिले की पूर्व से पश्चिम की लम्बाई 155 कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण 95 कि.मी. है। इसका कुल क्षेत्रफल 10532 वर्ग कि.मी. है। जिले के पूर्व में सिंगरौली, दक्षिण–पश्चिम में शहडोल, सतना दक्षिण में छत्तीसगढ़ का कोरिया जिला तथा उत्तर में रीवा जिला स्थित है।

तापमान, वर्ष एवं जलवायु

सीधी जिले का अधिकतम तापमान मई जून से 45.46^0 से0 तथा न्यूनतम तापमान माह दिसम्बर–जनवरी में 5^0 से0ग्रे0 तक रहता है। जिले मे औसत वर्षा 950 मिलीमीटर से 1250 मि0मी0 तक होती है। जिले की जलवायु सामान्यतः समशीतोष्ण है। ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी तथा शीत ऋतु में अधिक सर्दी पड़ती है।

नदी, पहाड़ एवं मिट्टी

जिले की सबसे बड़ी नदी सोन है। बनास, गोपद एवं रिहन्द इसकी सहायक नदियाँ हैं। ये समस्त नदिया सोन, बेसिन के अन्तर्गत आती हैं। जिले के मैदानी भागों की मिट्टी उपजाऊ है, किन्तु पर्वतीय क्षेत्र की मिट्टी कम उपजाऊ तथा हल्के किस्म की है।

भू–रचना के आधार पर सीधी जिले को मुख्य रूप से 3 भागों में विभक्त किया गया है–

1. उत्तर की कैमोर श्रेणियाँ
2. मध्य सोन घाटी
3. दक्षिण की मझौली मड़वास पठार

जनगणना एवं लिंगानुपात

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार सीधी जिले की जनसंख्या 1127033 है, जो जिले में वृद्धि 23.72 प्रतिशत है। जिले में पुरुष जनसंख्या वृद्धि 22.74 प्रतिशत व महिला 24.75 प्रतिशत है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 2: संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में जनजाति के बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में जनजाति के बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना			
			जागृत है		जागृत नही है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	50	42	84.00	8	16.00
2.	शिक्षक	100	73	73.00	27	27.00
3.	अभिभावक	100	63	63.00	37	37.00
4.	छात्र	1000	745	74.50	255	25.50
योग		1250	923	73.84	327	26.16

सारणी क्र. 2 एवं आरेख क्र. 1 से स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 84.00 प्रतिशत प्राचार्य, 73.00 प्रतिशत शिक्षक, 63.00 प्रतिशत अभिभावक व 74.50 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में जनजाति के बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना जागृत है और शोध क्षेत्र के 37.00 प्रतिशत अभिभावक व 27.00 प्रतिशत शिक्षक, 25.50 प्रतिशत छात्र व 16.00 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में जनजाति के बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना जागृत नही है।

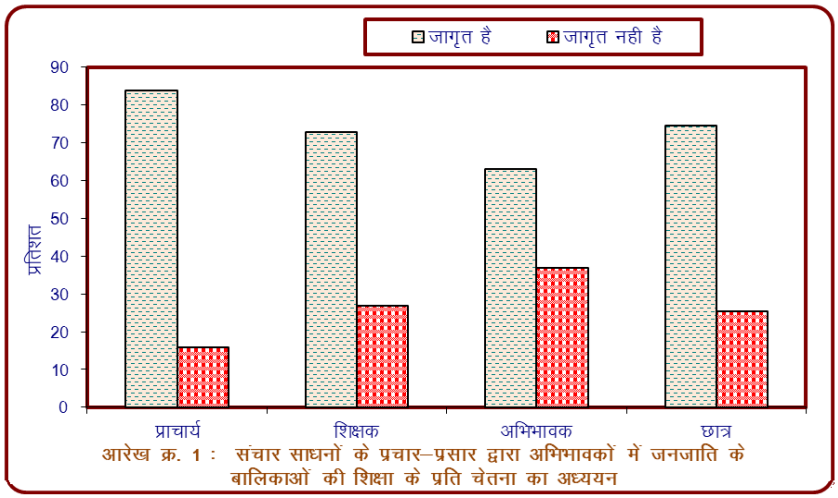

आरेख क्र. 1 : संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में जनजाति के बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना का अध्ययन

सांख्यिकीय विष्लेषण, काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	जागृत है	जागृत नही है
F_o	923	327
F_e	625.00	625.00
F_o-F_e	298.00	-298.00
$(F_o-F_e)^2$	88804.00	88804.00
$\frac{(F_o-F_e)^2}{F_e}$	142.09	142.09

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 284.17$

विष्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में आदिवासी जाति के बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना जागृत की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा χ^2 का मान 284.17 है, जबकि तालिकामान 1क पर तथा 0.05 व 0.01 समअमस पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में जनजाति के बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि सीधी जिले में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा अभिभावकों में जनजातीय क्षेत्रों के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है।

संदर्भ

1. शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
2. बेहार, शरद (1983) : मध्यप्रदेश का शैक्षिक इतिहास, पृ. 46. (पलास, शिक्षा विशेषांक)
3. पाठक, पी.डी. (2007) : शिक्षा मनोविज्ञान, छत्तीसवां संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. गुप्ता, एस.पी. (1997) : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
5. कौल, लोकेश (1998) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली.
6. कुमार प्रमिला (2003) : मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, चौदहवां संस्करण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
7. Anjaiah G. Incentives, Interventions and Achievement of Universalization of Primary Education in School Under the Integrated Tribal Development Agency, Visakhapatanam District Andhra Pradesh. Department of Education Andhra University Visakhapatnum, 2008.
8. Naidu TS. Tribal Education in South India-Problems of dropout children and future prespectives: Journal of Educational Research and Education. 2000; 39(2):36-46.
9. Pradhan Nityananda. Education of out of school Tribal Girls. The Primary Teacher, 2004; 29(3-4):57-68.